शोध मंथन, Impact Factor 6.726 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255 (e): 2454-339X
Vol. X, No.III, pp (937-944) July - Sep. 2019

उच्च शिक्षा और भारतीय महिलाएँ एक समाज शास्त्री का अध्ययन

डा0 अजीत सिंह तोमर,
एसो0 प्रोफे0
समाजशास्त्र विभाग, मेरठ कॉलिज, मेरठ

नीलम कुमारी,
शोधकर्ता
समाजशास्त्र विभाग, मेरठ कॉलिज, मेरठ
Email:neelambistdav@gmail.com

सारांश

शिक्षा को एक ऐसे उपकरण के रूप में मान्यता दी गई है जिसकी सहायता से समाज में परिवर्तन व विकास के (अमीष्ट) लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है। जब महिला शिक्षा की बात करते हैं तो यह स्पष्ट देखा जा सकता है कि इस संदर्भ में वांछित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाना शेष है। परन्तु यह भी सच है कि महिला शिक्षा की आवश्यकता और उपयोगिता के प्रति मानव समाजों की समझ क्रमशः बढ रही है। विश्वभर में महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिये किये गये आन्दोलनों में उनकी निम्न स्थिति को सुधारने (बदलने) के लिए शिक्षा को एक महत्वपूर्ण साधन माना गया है।

प्रस्तावाना

उच्च शैक्षिक संस्थानों में कार्यरत भारतीय महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक स्थिति तथा उनके जीवन मूल्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन

शिक्षा को एक ऐसे उपकरण के रूप में मान्यता दी गई है जिसकी सहायता से समाज में परिवर्तन व विकास के (अमीष्ट) लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है। जब महिला शिक्षा की बात करते हैं तो यह स्पष्ट देखा जा सकता है कि इस संदर्भ में वांछित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाना शेष है। परन्तु यह भी सच है कि महिला शिक्षा की आवश्यकता और उपयोगिता के प्रति मानव समाजों की समझ क्रमशः बढ रही है। विश्वभर में महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिये किये गये आन्दोलनों में उनकी निम्न स्थिति को सुधारने (बदलने) के लिए शिक्षा को एक महत्वपूर्ण साधन माना गया है। स्त्री शिक्षा के महत्व को उसके विविध व विस्तृत सन्दर्भ में देखा जानने लगा है। इन्ही आयामों में शामिल है। शिक्षा के माध्यम से महिलओ की समानता व सशक्तिकरण के अर्धपूर्ण प्रयासों की संभावना। आज महिलाओं के मानवीय अधिकारों तथा समाज व राष्ट्रो के इसके लिए प्रयासरत है।

प्रस्तुत शोध पत्र में यह देखने का प्रयास किया गया है कि उच्च शैक्षणिक संसधानों मे कार्यरत महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक स्थिति कितनी मजबूत हुई है। महिलाएं आर्थिक रूप से सुदृढ हुई है उनके निर्णय लेने की क्षमता बढी है।

1. शिक्षा का शाब्दिक अर्थ :–

शाब्दिक अर्थ :– शिक्षा शब्द अलग–अलग लेटिन शब्दो से मिलकर बना है।

Educare - जिसका अर्थ है विकसित करना।

Educere - जिसका अर्थ है स्वतन्त्र रूप से बात करना।

Educatum - जिसका अर्थ है शिक्षा का अनुकरण करना।

Educatus - जिसका अर्थ है शिक्षा देना।

2. (क) उच्च शिक्षा का सामाजिक अर्थ

उच्च शिक्षा से तात्पर्य यह है कि वह शिक्षा जो कि कॉलिज व विश्वविद्यालयी स्तर पर ज्ञान व योग्यता को प्रदान करने व विकसित करने हेतु दी जाती है।

परिभाषाएँ:–

महात्मा गाँधी के अनुसार :– ''शिक्षा वह है जो कि व्यक्ति के शरीर में मन में व आत्मा में जो भी उत्तम है उसे अभिव्यक्त करती है।''

डा0 जाकिर हुसैन के अनुसार – किसी भी व्यक्ति के मस्तिष्क का पूर्ण रूप से विकास शिक्षा कहलाता हैं।

प्लेटो के अनुसार :– शिक्षा वह क्षमता है जिसके द्वारा हम सुखदुख को सही समय पर व्यक्त कर सकते हैं।

ऑक्सफोर्ड एडवांसड लर्नर डिक्शनरी :–

उच्च शिक्षा वह शिक्षा व प्रशिक्षण है जो कि विश्वविद्यालय और महाविद्यालय द्वारा उपाधि स्तर पर दिया जाता है।

2. (ख) उच्च शिक्षा का इतिहास :–

उच्च शिक्षा के इतिहास को हम निम्नलिखित विवरण द्वारा समझ सकते हैं। –

भारत में उच्च शिक्षा के विकास का अध्ययन कालक्रमानुसार प्रस्तुत है–

वैदिक काल में उच्च शिक्षा का विकास :–

संसार में उच्च शिक्षा का श्रीगणेश सर्वप्रथम भारत वर्ष में हुआ । यहाँ वैदिक काल में उच्च शिक्षा की व्यवस्था मुख्य रूप से ऋषि आश्रमों और गुरूकुलों में होती थी।

बौद्धकाल में उच्च शिक्षा का विकास :–

बौद्धो ने अपने मठो एवं बिहारों में शिक्षा के द्वार सभी के लिए खोल दिये। इस काल में तक्षशिला, नालन्दा और विक्रमशीला विश्वविद्यालयों को निर्माण हुआ। यह उस समय के विश्वविख्यात विश्वविद्यालय थे।

पूर्व मुगलकाल में उच्च शिक्षा का विकास :–

देश में मुस्लिम शासन की शुरूआत 1192 में हुई। कुतुबुद्दीन ऐबक इस देश का पहला मुस्लमान शासक था। उसने शिक्षा के क्षेत्र में पहला कार्य नालन्दा और विक्रमशिला विश्वविद्यालय को बर्बरतापूर्ण नष्ट करने का किया। परिणामतः अन्य बौद्ध शिक्षा केन्द्र भयवश बन्द हो गये परन्तु

इन मदरशों में हिन्दू जाति के बहुत कम बच्चे प्रवेश लेते थे। उच्च शिक्षा का विकास अवरूद्ध हो गया।

मुगल काल में उच्च शिक्षा का विकास

भारत में मुगल साम्राज्य की नीव 1556 में बाबर ने डाली। उसने अपने शासन काल में अनेक मदरसों का निर्माण कराया। वह उदार प्रवृत्ति का व्यक्ति था, उसने मदरसों में भारतीय भाषा और साहित्यों की शिक्षा की भी व्यवस्था की। अकबर ने आगरा में पूर्तगाली प्रणाली के जेसट कॉलिज के आधार पर भी एक जेसट कॉलिज की स्थापना की परिणामतः उसके शासन काल में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में काफी विकास हुआ।

ईसाई मिशनरी काल में उच्च शिक्षा का विकास

इस देश में सर्वप्रथम पुर्तगाली ईसाई मिशनरियों का प्रवेश हुआ। इन्होने यहां प्राथमिक शिक्षा संस्थाओं के साथ –साथ कुछ उच्च शिक्षा संस्थाओं की स्थापना भी की। जिसमें चॉल का जेसट कॉलिज और बान्द्रा का सेन्ट एनी कॉलिज मुख्य थे। परन्तु इनका पाठयक्रम आधुनिक उच्च शिक्षा से बहुत भिन्न था। बहुत निम्न स्तर का था।

ब्रिटिश शासन काल में उच्च शिक्षा का विकास

इस समय भारत में केवल तीन विश्वविद्यालय, 27 सामान्य कॉलिज, 3 मेडिकल कॉलिज और 1 इन्जिनियरिंग कॉलिज था। 1880 मे लार्ड रिपन ब्रिटिश भारत के गर्वनर जनरल एवं वायसरॉय नियुक्त हुए। 1882 में 'भारतीय शिक्षा आयोग' की नियुक्ति की। 1902 भारत के तत्कालीन गर्वनर जनरल और वायरस लार्ड कर्जन ने भारतीय विश्वविद्यालय आयोग का गठन किया । इस आयोग ने उच्च शिक्षा के सम्बद्ध में अनेक सुझाव दिये जिनमें दो सुझाव बहुत अर्थपूर्ण साबित हुए पहला यह कि विश्वविद्यालयो में शिक्षण कार्य शुरू किया जाये और दूसरा यह कि नये कॉलिजो को मान्यता देने में कठोरता बरती जाये।

स्वतंत्र भारत में उच्च शिक्षा का विकास :–

15 अगस्त 1947 को हमारा देश स्वतन्त्र हुआ और 1948 में हमारी सरकार ने 'विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग' (राधाकृष्णन् कमीशन) की नियुक्ति की। सरकार ने 1953 में विश्वविद्यालय अनुदान समिति को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के रूप में समुन्नत किया और इसके निम्नलिखित कार्य निष्चित किये –(1) **उच्च शिक्षा का स्तरमान बनाये रखना। (2) उच्च शिक्षा के सन्दर्भ में केन्द्रीय सरकार को परामर्श देना, (3) उच्च शिक्षा संस्थाओ को आर्थिक अनुदान देना।**

(ग) भारत में उच्च शिक्षा के उद्देश्यः–

भारत ने विभिन्न स्तरों की शिक्षा के उद्देश्य करने का कार्य सर्वप्रथम वुड के घोषणा पत्र (1854) में किया गया । 1948 में भारत सरकार ने राधा कृष्णन आयोग का गठन किया इसने उच्च शिक्षा के जो उद्देश्य निश्चित किये उन्हें निम्नलिखित रूप से क्रमबद्ध किया जा सकता है।

1. व्यक्तियों के अनुवांशिक गुणों को ज्ञात कर उनका विकास करना।

2. ऐसे व्यक्तियों को निर्माण करना जो राजनीति, प्रशासन, व्यवसायी, उद्योग और वाणिज्य के क्षेत्र में नेतृत्व कर सके।

ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना जो शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ एवं मानसिक दृष्टि से प्रबुद्ध हों।

3. ऐसे व्यक्तियों को निर्माण करना जो दूरदर्शी, बुद्धिमान और बौद्धिक दृष्टि से श्रेष्ठ हो और सामाज सुधार के कार्यो में सहयोग दे सके।

4. युवाओ का चरित्र निर्माण करना।

5. ऐसे नवयुवको का निर्माण करना जो अपनी सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण करे उसमें योगदान दें।

6. युवकों में प्रजातान्त्रीक मूल्यों, समानता, स्वतन्त्रता, भ्रातव्य और न्याय का संरक्षण करना।

7. युवको में विश्व बन्धुत्व और अन्तर्राष्टीय सद भाव का विकास करना।

8. युवको में राष्ट्रीय अनुशासन की भावना का विकास करना।

इसके बाद कोठारी आयोग (1964–66) ने उसके द्वारा प्रतिपादित उद्देश्यों को अपेक्षाकृत कुछ संक्षिप्त रूप में व्यक्त किया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में उच्च षिक्षा के उद्देश्यो के विषय में कहा गया है कि उच्च शिक्षा उच्च ज्ञान की प्राप्ति और नवीन ज्ञान की खोज, राष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रो के लिए विशेषज्ञों की तैयारी युवकों विस्तृत दृष्टिकोण के विकास और राष्ट्र के बहुमुखी विकास का साधन है।

उच्च शिक्षा का महत्व

उच्च शिक्षा का वास्तविक अर्थ है उच्च प्रतिभा के व्यक्तियों की उच्च शिक्षा, विशिष्ट शिक्षा, एक ऐसी शिक्षा जिसके द्वारा समाज अथवा राष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों के लिए विशेष तैयार किए जाते है। तब इसका महत्व एवं आवश्यकता स्वयं सिद्ध है। उच्च शिक्षा के इस महत्व को हम निम्नलिखित रूप में देख–समक्ष सकते है।

1 **उच्च ज्ञान की प्राप्ति, नए ज्ञान की खोज और सत्य की पहचान** – उच्च शिक्षा में युवकों को मानविकी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान और अन्य क्षेत्रों का उच्च ज्ञान कराया जाता है और उन्हें नए ज्ञान की खोज और वास्तविक तथ्यों का पता लगानें के अवसर दिए जाते है।

2 **विशेषज्ञों का निर्माण–** उच्च शिक्षा द्वारा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों– धर्म, दर्शन, ज्ञान, विज्ञान, इंजीनियरिंग, मेडिकल विधि, अध्यापन, संगठन और प्रशासन आदि के लिए विशेषज्ञ तैयार किए जातें है, उच्चतम श्रेणी के मानव संसाधन तैयार किए जाते है, उच्च शिक्षा के अभाव में ये सब सम्भव नहीं है। प्राथमिकता पुरूषों को दी जाती है। स्त्रीयों की शिक्षा को अनावश्यक समझा जात है। इसका कारण है वे स्त्री शिक्षा के महत्व से अनभिज्ञ है।

महिलाओं को समानता के लिए शिक्षा

महिलाओं के आत्मविश्वास में वृद्धि करना, एक ऐसा वातावरण निर्मित करना जहाँ

महिलाऐं ज्ञान और सूचनाएं प्राप्त कर सके, जिससे उन्हें समाज में एक सकारात्मक भूमिका निभाने में मदद मिले। महिलाओं और किशोरियों को शिक्षा के अवसर मिल सकें, और औपचारिक व औपचारिकेतर शिक्षा कार्यक्रम में अनकी भागीदारी को बढावा मिलें।

विकसित देशों में स्त्रियों की स्थिति मजबूत हुई है। वहां पर स्त्रियों को पुरूष के बराबर दर्जा दिया गया है। सभी क्षेत्र में स्त्रियां कार्य कर रही है। चाहे वह ट्रक चालाने का कार्य हो, रिक्शा या फिर हवाई जहाज चलाने का, वे किसी भी क्षेत्र में पुरूषों से पीछे नही है। ऐसा नही है कि केवल विदेशों में ही स्त्रीयों पुरूषों से आगे है। केरल में महिलायें उच्च शिक्षित हैं व ऊँचे पदो पर आसीन हैं जैसे–चिकित्सा, इंजीनियरिंग शैक्षिक, न्यायियक आदि क्षेत्रों में महिलायें उच्च पदों पर आसीन है। महिलायें अपने कर्तव्यों और अधिकारों के प्रति सजग है।

किसी भी देश के विकास में वहां के लोगो का सबसे बडा हाथ होता है। यदि देश की स्त्रियां शिक्षित व आत्मनिर्भर होगीं तो वे अपने परिवार की सही तरह से देखभाल कर पायेगीं।

4. भारतीय सरकार द्वारा आयोजित कुछ महत्वपूर्ण प्रयास :–

1 उच्च एवं तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर रही एकल बालिका हेतु इन्दिरा गाँधी छात्रवृत्ति योजना।

- छात्रवृत्ति के द्वारा उच्च शिक्षा को सहयोग करने के लिये उन महिला छात्राओ हेतु जो अपने परिवार में अकेली संतान है। इससे परिवार का आकार छोटा रखने का संदेश भी दिया जा सकेगा।
- केवल वे महिला छात्रायें ही इस योजना हेतु योग्य होगी जिनकी आयु एडमिशन लेते समय 30 वर्श होगी।
- छात्रवृत्ति की राशि रूपये 2000 ⁄ – महीना होगी जबकि 20 महीने तक दी जायेगी।
- रूपये 4.88 लाख की राशि छात्रवृत्ति हेतु उपलब्ध करायी गई है, अर्हता रखने वाली छात्राओं हेतु

2 महिला छात्राओं हेतु हॉस्टल व कॉलिजों का निर्माण द्वारा।

- यू0जी0सी0 ने कुछ संस्थाओं को नामित किया है समान अवसर उपलब्ध कराने के लिये समिति का गठन करने हेतु। यह देखने के लिये कि अलाभान्वित समूहों के लिये कार्यक्रम व नीतियां सही से लागू हो और उनके लिये काउंसलिंग, शिक्षा में आर्थिक व सामाजिक एवं अन्य मुद्दों हेतु उपलब्ध हो सकें।

3 अनुसूचित जाति ⁄ जनजाति एवं अन्य हेतु समान अवसरों को उपलब्ध कराना।

4 विश्वविद्यालयों मे ंआवासियों कोचिंग संस्थाओ की स्थापना।

5 Nk=@Nk=kv ksd ksN.E.T. (National Eligibility Test) हेतु प्रशिक्षण देना।

6 महिला सशक्तिकरण में उच्च शिक्षा का योगदान

शिक्षा को एक ऐसे उपकरण के रूप में मान्यता दी गयी है जिसकी सहायता से समाज में परिवर्तन व विकास के अभीष्ठ लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है। यही कारण है कि मानव

अधिकारो के सार्वभौमिक घोषणा पत्र में शिक्षा को प्रत्येक मनुष्य के मूल अधिकारो में से एक माना गया है। आज स्पष्टतः माना जाने लगा है कि शिक्षा ही वह उपकरण जिससे महिला समाज में अपनी सशक्त, समान व उपयोगी भूमिका दर्ज करा सकती है।

भारत में स्वतन्त्रता के पश्चात संविधान द्वारा प्रदत्त समानता के अधिकारों ने राजनीति, अर्थव्यवस्था और समाज में बहुविधि भूमिका निर्वाह करने के लिए महिलाओ को आवहान करके उनकी स्थिति सुधारने हेतु नये–नये आयाम प्रस्तुत किये।

किसी भी समाज व राष्ट्रीय का विकास तभी संभव है जब कि उस समाज मे महिलाओं व पुरूषों का समान अधिकार व अवसर प्राप्त हो।

साहित्य अवलोकन

अन्तर्राष्टीय अध्ययन

1 वूमेन हायर एजूकेशन एडमीनिस्ट्रेशन विद चिल्ड्रनः– निगोशिएटिंग पर्सनल एण्ड प्रोफेशनल लिवस (मार्शल, सराह एम0 2009)

निशिगन (यू0एस0ए0) में किये गये इस अध्ययन का उद्वेश्य यह था कि किस प्रकार से महिलाऐं जो कि उच्च शिक्षित हैं प्रशासनिक पदों पर हैं, वे किस प्रकार से अपने व्यवसाय व अपने बच्चों के मध्य तालतम्य स्थापित करती है। अपने अध्ययन में साराह एम0 मार्शल ने यह ज्ञात किया कि कामकाजी महिलाओ के जीवन में पारिवारिक व कामकाजी जीवन को लेकर जटिलता पाई गयी है एवं यह काफी चुनौतीपूर्ण रहता है। प्रतिभागियों ने इन दोनों भूमिकाओं के बहुत से लाभों पर प्रकाश डाला इस अध्ययन में महिलाओं ने उन परेशानियों को साझा किया है जो कि उनके उत्तरदायित्वो व व्यवसाय के परिणाम स्वरूप हैं जिनका वेा सामना करती हैं। यह भी तथ्य सामने आया कि व्यवसाय में होने से महिलाओं के जीवन को नये आयाम व नये अर्थ प्राप्त हुए है।

2 वूमेन इन हायर एजुकेशन मैनेजमैन्ट इन फिनलैण्ड

फिनलैण्ड में अपने अध्ययन के आधार पर वैरोनिका स्टोल्टे हिस्केनन ने यह ज्ञात किया कि शैक्षिक योग्यता के आधार पर महिलाओ में जो प्रगति होनी चाहिए थी। वह देखने का नही मिली। शैक्षिक अर्हता होन के बाद भी यह बात सामने आयी थी कि जो समाज है वह आज भी पुरूष प्रधान है और जो उपलब्ध संसाधन है वो पुरूषों के हित मे ही जाते है।

यह भी तथ्य सामने आया कि व्यवसाय में होने से महिलाओं के जीवन को नये आयाम व नये अर्थ प्राप्त हुए हैं इस वजह से महिलाओ को उच्च षिक्षा होने के बाद भी समाज में वो पहचान नही मिल पाती है।

3. एमपावरमैन्ट ऑफ वूमेन इन हायर एजूकेशन इन अफ्रीकाः– द रॉल एण्ड मिशन ऑफ रिसर्च (जून 2006)

अफ्रीका में हुए इस अध्ययन में यह ज्ञात किया गया कि महिलाओं की भागीदारी कम

है बडे स्तर पर परिवर्तन की आवश्यकता है। यह तथ्य भी सामने आया कि अभी भी लिंग भेद है उच्च शिक्षा में महिलाओं समुचित प्रतिनिधित्व नही है। महिला व पुरूषों के मध्य समानता के लिए सीमित भागीदारी बहुत बडी बाधा हैं । अफ्रीका में एक महत्वपूर्ण बात यह भी सामने आयी थी नीति निर्माण में महिलाओं की भागीदारी नगण्य है।

राष्ट्रीय अध्ययन

1 **रोल ऑफ हायर एजेकूशन इन वूमेन एम्पावरमेन्टः–ए स्टडी (हुसैन फरहा, जाधव, शीतल एम0 2013)** इन्होनें अमरावती मे किये गये अपने अध्ययन के आधार पर यह पाया कि उच्च शिक्षा सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण साधन है। ज्ञान, योग्यता, कुशलता व आत्मविश्वास के साथ विकास में भाग लेने हेतु महिलाओ की शिक्षा एक सशक्तिशाली उपकरण है। महिलाओं की समाज में स्थिति बदलने सही निर्णय लेने ओर अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए ।

2 **स्टेट ऑफ वर्किंग वूमेन इन इण्डिया (के0वी0 सिंह 2007)** – भारत में नगरीया समाज पर किये गये अपने अध्ययन में इन्होनें ने यह पाया कि – शिक्षित कामकाजी महिलाओ नगरीय समाज मे एक महत्वपूर्ण भाग रखती है। इन्होने औपचारिक व अनऔपचारिक दोनों ही क्षेत्रों में कार्य करके अपनी योग्यता व महत्व को दर्शाया है। शिक्षा के साथ रोजगार में महिलाओ को सामाजिक पदानुक्रम में कुछ पग और आगे कर दिया है।

कामकाजी महिलाऐं अपना वेतन स्वयं रखती है परन्तु अपनी पति की अनुमति के बिना उसे खर्च नही करती हैं। परिणाम स्वरूप वेतन पर पति का आधिपत्य अधिक होता है अधिकतर पतियों द्वारा महिलाओं को प्रेरित करते देखा गया है। नौकरी के लिए पर पत्नी के वेतन पर पति का ही अधिकार देखा गया है। जब भी पत्नी अपना वेतन स्वयं खर्च करना चाहती है तो परिवार में मन मुटाव हो जाता हैं। यदि पत्नि का वेतन पति से अधिक होता है वह उसकी आर्थिक स्थिति अधिक मजबूत होती है तो पति द्वारा पत्नि को कम पंसद किया जाता है। इस कारण से परिवार में मधुर सम्बन्ध बनाये रखने के लिए स्त्री अपनी स्थिति को इच्छा या अनिच्छा होते हुए भी स्वीकार कर लेती है।

3 **हायर एजूकेशन एण्ड एम्पलोयमेन्ट एसपायरेषन ऑफ वूमेन इन इण्डिया (जोजेफ टीनू सितम्बर 2013)** केरल में किये गये इस अध्ययन में टीनू जोजेफ ने यह देखा कि महिलाओ की उच्च शिक्षा के प्रति आकांक्षा ओर स्तर के मध्य एक मजबूत अर्तसम्बन्ध पाया है। यह राज्य जिनमे महिलाओ के स्तर का उच्च सूचकांक पाया जाता है। जैसे केरल, पंजाब ओर मेघालय वे उच्च शिक्षा में पंजीकरण के सन्दर्भ में उच्च रैंक पाया गया है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अधिकतर राज्यों में इन्जिनियरिंग की अपेक्षा कला विज्ञान और चिकित्सा में महिलाऐं अधिक प्राथमिकता देती है।

निष्कर्ष

उपरोक्त साहित्य पर आधारित अवलोक के अपने इस अध्ययन में हम यह देखते हैं कि उच्च शिक्षा में भारतीय महिलाओ की स्थिति काफी सुद्ढ हुई है। स्वतंत्रता प्राप्ति से अब तक

आश्चर्यजनक वृद्धि हमें महिला शिक्षा में देखने को मिला है। जहा स्वतंत्रता प्राप्ति तक महिला शिक्षा का प्रतिशत 10 प्रतिशत से भी कम था वही वर्तमान में यह 40.41 प्रतिशत हो गया है।

परन्तु जहां एक और सकारात्मक परिणामों के वृद्धि हुई है, उच्च सशक्तिकरण में वही कुछ अध्ययन यह भी दर्षाते है कि हमें अभी और प्रयास करने की आवश्यकता है।

जैसा कि के0वी0 सिंह ने अपनी पुस्तक ''**वूमेन इश्यू : एमपावरमैन्ट एण्ड जेण्डर डिक्रीमिनेशन''** में बताया है कि उच्च शिक्षित महिलाओं ने जहाँ पुरूषो की बराबरी करते हुए रोजगार में समान अवसर प्राप्त कर अपना कौशल सिद्ध किया है वहीं कुछ पारम्परिक सोच की बेडियां आज भी उनके पैरों में देखने को मिलती है। साहित्य के अवलोकन के अनेक महत्वपूर्ण तथ्य सामने आये हैं। जैसे कि निशिगंन में हुए अध्ययन के ज्ञात हुआ कि उच्च शिक्षित होते हुए भी महिलाओं को अपने पारिवारिक एवं व्यवसायिक जीवन में अनेक जटिलताओ को सामना करना पडा है। अच्छी शैक्षिक अर्हता होने के बाद भी फिनलेण्ड में पुरूषो की अधिक प्रधानता है। इसी प्रकार इन्डोनेशिया में महिलाओ की उच्च शिक्षा व्यवस्था में भागीदारी कम देखी गयी है।

इसके बावजूद यही तुलनात्मक दृष्टि डालें तो हम पाते है कि भारतीय समाज में महिलाओं की उच्च शिक्षा पर हम कह सकते है कि महिलाओ का उच्च शिक्षा के द्वारा सशक्तिकरण बडी मात्रा में हुआ है। भविष्य में और विकास की ओर प्रयास करते हुए हमें आग बढना है ताकि मौजूदा कमियों का सुधार कर शिक्षा के माध्यम से महिला को और सशक्त किया जा सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 लाल, रमन, बिहारी 2005 –06 : *''भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याऐँ''* प्रथम संस्करण, पीपी : **441 –451**

2 लुमुम्बा एन ड्राइ टी एस्सी 2006 : *'' एम्पावरमेंट ऑफ वुमैन इन हायर एजूकेशन''* इन अफ्रीका : द् रोल एण्ड मिशन ऑफ रिचर्स'' पंपर कमीशन्ड बाय द यूनेस्को फोरम सेकरेटिरिएट न्ययोर्क पीपी: **50–51**

3 वी0के0 सिंह 2007: *''स्टेट्स ऑफ वर्किंग वुमैन इन इण्डिया'* वुमैन इश्यू: एम्पावरमैंट एण्ड जेण्डर डिस्क्रीमीनेशन विस्टा इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस (दिल्ली) पी–पी–**61 –63** जोजेफ, टीनू

4 2013 : *'' हायर एजूकेशन एण्ड एम्पलोयमेन्ट इस्पायरेशनूस ऑफ वुमेन इन इण्डिया''* मैप एण्ड डवलपमेंट सितम्बर पी–पी: **127 –136**

5. https:/johnparankimaililwordpress.com/20